B.A. (Hons) Part I

Philosophy Paper I

Topic — सांख्य दर्शन का पुरुष

Dr. Sachidanand Prasad.
Dept. of Philosophy.
R.R.S. College, Mokama.

सांख्य दर्शन के अनुसार परमतत्व दो है। (i) पुरुष और (ii) प्रकृति। जिस सत्ता को अन्य भारतीय दर्शनों में आत्मा कहा जाता है उसे सांख्य दर्शन में पुरुष कहा जाता है। पुरुष और प्रकृति में अन्तर यह है कि पुरुष चेतन है जबकि प्रकृति अचेतन है। पुरुष सत्व, रजस, तमस गुण से रहित है जबकि प्रकृति में उपरोक्त तीनों गुण पाया जाता है। पुरुष ज्ञाता है जबकि प्रकृति ज्ञान का विषय है। पुरुष निष्क्रिय है जबकि प्रकृति सक्रिय है। पुरुष अनेक है जबकि प्रकृति एक है। पुरुष कार्य-कारण से मुक्त है जबकि प्रकृति कारण है। पुरुष अपरिवर्तनशील है जबकि प्रकृति परिवर्तनशील है। पुरुष विवेकी है जबकि प्रकृति अविवेकी है। पुरुष अपरिणामी नित्य है जबकि प्रकृति परिणामी नित्य है। पुरुष की सत्ता का खण्डन करना असंभव है इसलिए पुरुष की सत्ता स्वयं सिद्ध है। पुरुष शुद्ध चैतन्य है क्योंकि चैतन्य आत्मा में सदैव निवास करता है।

सांख्य दर्शन में आत्मा को शरीर से भिन्न माना गया है। शरीर भौतिक है परन्तु आत्मा आध्यात्मिक है। आत्मा बुद्धि और अहंकार से भिन्न है क्योंकि आत्मा चेतन है। आत्मा इन्द्रियों से भी भिन्न है क्योंकि इन्द्रियाँ अनुभव का साधन है जबकि पुरुष अनुभव से परे है। पुरुष अकर्ता है। पुरुष को निष्क्रिय इसलिए माना गया है क्योंकि उसमें इच्छा, संकल्प एवं इत्यादि का अभाव है। आत्मा कार्य कारण की श्रृंखला से मुक्त है। पुरुष को न तो किसी वस्तु का कारण कहा जा सकता है और न कार्य। पुरुष देश और काल की सीमा से बाहर है। पुरुष सुख और दुःख से रहित है क्योंकि वह राग और द्वेष से मुक्त है। पुरुष पाप और पुण्य से भी रहित है। सांख्य दर्शन का पुरुष के सम्बन्ध में जो विचार है वह जैन दर्शन से भिन्न है क्योंकि जैन दर्शन में जीव को कर्ता, भोक्ता ~~[illegible]~~ माना गया है। सांख्य दर्शन का पुरुष संबंधी विचार ~~[illegible]~~ अद्वैतवेदान्त दर्शन से भिन्न है क्योंकि अद्वैत वेदान्त दर्शन के आत्मा को एक माना गया है जबकि सांख्य दर्शन आत्मा को अनेक मानता है।